इकाई 4 दैनिक जीवन में जेंडर

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 सामाजिक निर्मिति और जेंडर

- 4.3.1 जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति
- 4.3.2 जेंडर समाजीकरण
- 4.3.3 लड़की की निर्मिति

4.4 लैंगिक पृथक्करण का व्यवहार

4.5 श्रम विभाजन एवं कार्यक्षेत्र

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 सन्दर्भ

4.9 इकाई के समापन पर प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई को जेंडर और विकास अध्ययन के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए बनी इकाई से ग्रहण करते हुए उसे पूर्वस्नातक स्तर के विद्यार्थियों के लिए रूपांतरित किया गया है। जैसाकि इकाई का शीर्षक संकेत करता है, हमारा मुख्य उद्देश्य केस स्टडीज और उदाहरणों का उल्लेख करते हुए जेंडर की सामाजिक निर्मिति के विविध आयामों को और उसके अर्थ को समझना है। जेंडर की सामाजिक निर्मिति समाज के कई पहलुओं जैसे जाति, सगोत्रता (kinship), विवाह और अन्य चीजों के साथ जेंडर के सम्बन्धों को उजागर करती है। जेंडर–निर्मिति की प्रक्रिया को महिलाओं के जीवन के कई पहलुओं जैसे कि कार्य, निर्णय–निर्माण, ऑनर किलिंग और स्वायत्तता एवं स्वतंत्रता के प्रतीकों के सम्बन्ध में व्याख्यायित किया जा सकता है। जेंडर निर्मिति सूक्ष्म और वृहद दोनों स्तरों पर प्रचालित होती है और बहुत हद तक समाज की संस्थागत व्यवस्थाओं में निहित रहती है। इस इकाई में जेंडर निर्मिति की प्रक्रिया का वर्णन सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है जिससे कि सामाजिक रूप से निर्मित जेंडर के चलते महिलाओं के प्रति भेदभाव और उनके द्वारा सामना किए जाने वाली लैंगिक असमानता की जटिल प्रक्रिया को समझा जा सके।

इकाई में जेंडर की सामाजिक निर्मिति पर चर्चा की गई है। इकाई की शुरूआत सामाजिक निर्मिति के अर्थ की व्याख्या से होती है और जेंडर को संस्कृति, लिंग पृथक्करण, कार्यबल भागीदारी, निर्णय निर्माण, ऑनर किलिंग और स्वायत्ता तथा स्वतंत्रता के प्रतीकों के सम्बन्ध में समझने की कोशिश की गई है। जेंडर निर्मिति पर अगला अनुभाग मुख्य रूप से संस्कृति और विभिन्न संरचनाओं जैसे कि कार्य, लैंगिक पृथक्करण और श्रम के विभाजन पर केन्द्रित है, जो लैंगिक अन्तरों के आधार पर चल रहे जेंडर विभाजन को स्थायी बनाए रखता है। इसी प्रकार कार्य और श्रम के लिंग आधारित विभाजन वाले भाग में हमने जेंडर की चर्चा एक विश्लेषणात्मक औजार के रूप में की है जिससे कि असमानताओं को समझा जा सके। ये असमानताएँ कार्यों के श्रेणीतन्त्रीकरण के तरीकों, संसाधनों के असमान

वितरण, खेती और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं के कार्यों की अनदेखी और घरों व परिवार के अन्दर कार्य क्षेत्रों के लिंग आधारित अलगाव में दिखलाई पड़ती हैं।

आइए, इस इकाई के उद्देश्यों की ओर एक निगाह डालते हैं।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात, आप सक्षम होंगे कि आप :

- समाज की व्यवस्था और संस्कृति के सम्बन्ध में जेंडर निर्मिति की प्रक्रियाओं की व्याख्या कर सकें।
- विकास संकेतकों जैसे कि लैंगिक पृथक्करण (लिंग आधारित अलगाव), श्रम विभाजन, निर्णय–निर्माण और समाजीकरण के सम्बन्ध में जेंडर निर्मिति के निहितार्थों का परीक्षण कर सकें।
- जेंडर और समाज की संरचनात्मक व्यवस्थाओं के बीच संबध का परीक्षण कर सकें; और
- जेंडर निर्मिति की सार्वभौमिक स्थितियों के आवश्यक लक्षणों का विश्लेषण कर सकें।

4.3 सामाजिक निर्मिति और जेंडर

प्रायः कहा जाता है कि सामाजिक वास्तविकता जैसी कोई चीज नहीं होती। फिर प्रश्न उठता है कि आखिर 'सामाजिक निर्मिति' क्या है? कैसे किसी समाज का दृष्टिकोण या सामाजिक निर्मिति आकार ग्रहण करती है? क्या यह अपने आप आकार ग्रहण करती है? क्या यह संस्कृति विशिष्ट होती है? आइए, हम सामाजिक बनावट की इस प्रक्रिया का परीक्षण करते हैं।

प्रतिदिन विभिन्न सामाजिक अंतर्क्रियाओं के दौरान हम विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन करते हैं, तमाम घटनाओं का अनुभव करते हैं। ये घटनाएँ जिनका अनुभव हम व्यक्तिगत रूप से करते हैं, हमारे मन में उस समाज या दुनिया की एक तस्वीर बनाने में मदद करती हैं। वास्तव में जो कुछ भी हमारे साथ प्रतिदिन घटित होता है उसे हम दुनिया और समाज की अपनी समझ के चश्मे के आधार पर छानते (filter) जाते हैं। दुनिया या वस्तुओं के बारे में प्रतिदिन की ये संवेदनाएँ हमारी सामाजिक वास्तविकता का या सामाजिक वास्तविकता की निर्मिति का आधार बनती हैं। इस अर्थ में सामाजिक निर्मिति एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तिगत मनुष्य और अन्य सामाजिक संस्थाएं और व्यवहार आंतरिक रूप से सम्बन्धित रहते हैं। सामाजिक निर्मिति पर लोगों के किसी खास समूह या वर्ग का भी प्रभाव पड़ता है। यह उनसे आकार भी ग्रहण करती है और उनके हितों से प्रभावित भी होती है। इस अर्थ में प्रभावशाली समूहों की संस्कृति, मानकों, विचारधाराओं और मूल्यों का प्रयोग किसी खास सामाजिक निर्मिति के रूप को बरकरार रखने और उसे न्यायसंगत ठहराने के लिए किया जाता है। इसलिए सामाजिक निर्मितियाँ ऐसी प्रक्रियाएँ हैं जिनके माध्यम से हम दैनिक जीवन को समझते हैं और जाति, वर्ग, धर्म, समुदाय, गोत्र, जेंडर और अन्य आधारों पर लोगों का वर्गीकरण करने की कोशिश करते हैं। इस तरह लोगों का यह वर्गीकरण सामाजिक निर्मिति का परिणाम होता है।

अपनी प्रगति को जाँचिए

1) सामाजिक निर्मिति क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामाजिक निर्मितियों के आधार पर समूह किस तरह वर्गीकृत किए जाते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

आइए, अब हम सामाजिक निर्मिति और जेंडर के बीच सम्बन्धों का अध्ययन करें।

चूँकि हम जेंडर की सामाजिक निर्मिति की छानबीन करेंगे, इसलिए हम कुछ पहलुओं; जैसे– लिंग (सेक्स) और जेंडर के बीच अन्तर के साथ साथ जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति पर भी केन्द्रित रहेंगे।

लिंग (सेक्स) और जेंडर

जेंडर की सामाजिक निर्मिति की समझ की शुरूआत दो संकल्पनाओं की व्याख्या से होती है। ये दो संकल्पनाएँ हैं– जेंडर और सेक्स। संकल्पनाओं के रूप में ये दोनों शब्द भिन्न–भिन्न अर्थ रखते हैं। जेंडर शब्द ऐसे अन्तरों, श्रेणीतन्त्रों, पदानुक्रमों की तरफ संकेत करता है, जो पुरुष और महिला के बीच मौजूद होते हैं। यह समाज में महिलाओं और पुरुषों द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं से सम्बद्ध सांस्कृतिक निर्मितियों की व्याख्या करता है। इसके अतिरिक्त, जेंडर इस पहलू का विश्लेषण करता है कि महिलाओं का व्यवहार किस प्रकार समाज के मानकीय व्यवहार के अनुरूप आकार ग्रहण करता है। एक संकल्पनात्मक औजार के रूप में जेंडर का प्रयोग महिलाओं और पुरुषों के मध्य पाई जाने वाली असमानता के संरचनात्मक सम्बन्धों के विश्लेषण के लिए किया जाता है। यह असमानता समाज में हर जगह परिलक्षित होती है जैसे कि परिवार और घर में, धर्म, जाति, श्रम बाजार, शिक्षा, पारिस्थितिकी, वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों और राजनीतिक संस्थाओं में। जबकि दूसरी ओर लिंग (सेक्स) महिला और पुरुष के बीच के जैविक अन्तरों को स्पष्ट करता है, जो सभी स्थानों और समय में एकसमान बना रहता है।

इसलिए जेंडर को एक ऐसी धारणा (notion) के तौर पर पारिभाषित किया जा सकता है, जो रूपरेखाओं का एक ऐसा समुच्चय प्रस्तुत करती है जिसके भीतर सामाजिक और विचारधारात्मक निर्मिति और लिंगों के बीच के अन्तरों के प्रतिनिधित्व को व्याख्यायित किया जाता है। जेंडर समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चे स्वयं की पहचान करते हुए सामाजिक प्राणी के रूप में अपनी स्थिति ग्रहण करते हैं। उनकी यह पहचान निर्धारित जेंडर भूमिका और पुरुष या महिला के रूप में सामाजिक रूप से उपयुक्त व्यवहारों और विशेषताओं के साथ जुड़ी होती है। (स्टैनले एण्ड वाइज, 2002)

महिलाओं की पहचान सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत मातृत्वपरक भूमिका तथा महिलाओं द्वारा व्यक्तिनिष्ठ रूप से किए गए प्यार, दुलार, सहारे के अनुभवों के साथ जोड़कर देखी जाती है। जबकि सार्वजनिक क्षेत्र से पुरुषों की निकटता निर्वैयक्तिक और पेशेवर प्रकृति की है, जो स्त्रीत्व और पुरुषत्व की सामाजिक–सांस्कृतिक निर्मितियों के उत्पाद हैं। महिलाओं से प्राकृतिक माताओं, पत्नियों, पुत्रियों और गृहणियों के रूप में सामाजिक अपेक्षाएँ मात्र पितृसत्तात्मक निर्मितियों के कारण अस्तित्व में नहीं हैं, बल्कि यह समाज के भौतिक वातावरण में भी संचालित होती रहती है। कुछ नारीवादी भूगोल वेत्ताओं ने तर्क पेश किया है कि अंतरिक्ष और जेंडर सामाजिक रूप से निर्मित किए जाते हैं और महिलाओं का शरीर, उनकी गतिविधियाँ और उनकी गतिशीलता निश्चित भौतिक क्षेत्रों और संरचनाओं तक सीमित है। उदाहरण के लिए, यह माना जाता है कि घर की निर्मिति महिला की जेंडर भूमिका के परिणामस्वरूप होती है जबकि वही घर स्वतंत्रता और गतिशीलता तक महिलाओं की पहुँच को बाधित करता है, संकुचित करता है। इसी तरह से ऐसी महिलाएँ जो घरों से बाहर जाकर काम करती हैं और कॉल सेंटर इत्यादि जगहों पर काम करने के लिए रात में यात्राएँ करती हैं, प्रायः यौन उत्पीड़न, बलात्कार और हत्या की शिकार हो जाती हैं। यह श्रम को स्त्रीकृत करने के सिद्धान्त में एक विमर्श है जो दिखलाता है कि काल सेंटर उद्योग की समय–स्थान प्रणाली किस प्रकार अपनी प्रकृति में जेंडरीकृत है (पटेल, 2010)। लिंग (सेक्स) किसी व्यक्ति को उसके लैंगिक वर्गीकरण के साथ जोड़ता है और परिणामस्वरूप उक्त व्यक्ति को स्त्रीत्व और पुरुषत्व की सामाजिक धारणाओं के भीतर जकड़ देता है। जेंडर समाजीकरण की यह प्रक्रिया व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह अपने लैंगिक वर्गीकरण को सामाजिक स्तर पर कायम रखे।

4.3.1 जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति

जेंडर एक बहुत जटिल घटना (phenomenon) है जिसकी निर्मिति सामाजिक रूप से और निर्धारण सांस्कृतिक रूप से होती है। संस्कृति को सम्बन्धों के एक ऐसे संजाल (networks) के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो किसी विशेष समुदाय या समूह के जीवन के प्रतिमान (pattern) को एक अर्थ प्रदान करता है। संस्कृति जीवन के लगभग सभी पहलुओं को समाविष्ट करती है जिसमें उत्पादन के संगठन, परिवार और अन्य संस्थाओं की संरचना, समाज की विचारधाराएँ और मानकीय प्रतिमान तथा अन्तर्क्रियाओं या सम्बन्धों की प्रकृति शामिल होते हैं। जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति समाजीकरण के सन्दर्भ में पुरुषत्व और स्त्रीत्व की निर्मिति की बात करती है। इसका अर्थ है सामाजिक विकास के दौरान व्यक्ति स्त्रीवाचक या पुरुषवाचक होने के लिए जेंडरीकृत शरीर हासिल करते हैं। स्त्रीत्व और पुरुषत्व की निर्मिति परिवार, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक और धार्मिक संगठनों और संस्थाओं से भी आकार ग्रहण करती है। संस्कृति के सम्बन्ध में जेंडर की निर्मिति को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत वर्णित किया जा सकता है :–

- जेंडर की निर्मिति प्रभुत्व के तंत्र को सहारा देती है : जेंडर की श्रेणियाँ न तो कभी निष्पक्ष होती हैं और न ही समान। पुरुष और महिला के बीच असमान सम्बन्ध के तन्त्र के रूप में जेंडर कार्यक्षेत्र में, उत्पादन प्रक्रियाओं में, संसाधनों और शक्ति तक पहुँच में, विशिष्ट जेंडर भूमिकाओं को स्वीकारने में और श्रम बाजार में लैंगिक पृथक्करण के रूप में व्यक्त होता है।

- जेंडर की निर्मिति बनाम जेंडर की वैयक्तिक अभिव्यक्ति : नारीवादी मनोविश्लेषक मूल्यांकित करते हैं कि जेंडर को अनन्य रूप से सांस्कृतिक, भाषिक और राजनीतिक निर्मिति के तौर पर नहीं देखा जा सकता। इसलिए, जरूरत इस बात की है कि जेंडर

की निदेशात्मक (prescriptive) निर्मिति और इन निर्मितियों पर वैयक्तिक विचारों में अन्तर किया जाना चाहिए। जेंडर की निदेशात्मक निर्मिति उन छवियों को संदर्भित करती है जो सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से निर्धारित की जाती हैं। उदाहरण के लिए, समाज में यह विचार गहराई से जड़ जमा चुका है कि किसी बच्ची को भविष्य में गृहणी बनने के लिए ही तैयार किया जाना चाहिए और समाज का यह विचार उसके पहनावे के चयन, उपयुक्त आचरण और महिलाओं को देखभाल करने या पोषण करने वाली गतिविधियों में लगाए जाने से व्यक्त होता है।

वैयक्तिक विचार उन अन्तर्क्रियाओं के फलस्वरूप बनते हैं जो उस व्यक्ति की मानसिकता तथा सामाजिक–राजनीतिक या सांस्कृतिक या ऐतिहासिक मानकों के बीच घटित होती हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई लड़का/लड़की लिंग परिवर्तन के लिए शल्य चिकित्सा से गुजरता/गुजरती है तो दो प्रश्न ऐसे होते हैं जिनका विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता है। ये दो प्रश्न इस प्रकार हैं : किसी व्यक्ति की जेंडर पहचान में परिवर्तन के बाद समाज उसके प्रति कैसी प्रतिक्रिया करता है? समाज के सदस्य किस हद तक विविध जेंडर भूमिकाओं और व्यवहारों को आत्मसात कर पाते हैं? यह बिन्दु हमारे सामने 'जेंडर व्यवहार (doing gender)' को एक संकल्पना के तौर पर चर्चा के लिए प्रस्तुत करता है। जेंडर व्यवहार में सामाजिक रूप से शासित बोधात्मक, अन्तर्क्रियात्मक और सूक्ष्म राजनीतिक गतिविधियों का जटिल समुच्चय शामिल रहता है जो पुरुषवाचक या स्त्रीवाचक प्रकृति की अभिव्यक्तियों के रूप में विशेष कार्य करता है (वेस्ट एण्ड जिम्मरमैन 2002)। इसलिए, जेंडर सामाजिक स्थितियों में अन्तर्निहित होता है अर्थात् यह 'सामाजिक व्यवस्थाओं का उत्पाद' और 'सामाजिक व्यवस्थाओं द्वारा उत्पादित' दोनों होता है। न नया जन्म लेने वाला बच्चा उसी लैंगिक पहचान को लेकर आगे चलता है जिसे उस बच्चे पर समाज द्वारा थोपा गया होता है। अन्ततोगत्वा, माता–पिता या प्राथमिक रखवालों से लगातार अन्तर्क्रिया द्वारा शिशु धीरे–धीरे जेंडर पहचान ग्रहण कर लेता है। जेंडर व्यवहार एक प्रक्रिया है जो समाज में इस मूलभूत जेंडर विभाजन को वैधता प्रदान करती है।

बॉक्स सं. 4.1

एग्नेस का मामला : एक किन्नरलिंगी (Transsexual) लड़का

वेस्ट और जिम्मरमैन तीन विश्लेषणात्मक श्रेणियों; जैसे – लिंग, लिंग श्रेणी और जेंडर की चर्चा करते हैं ताकि जेंडर व्यवहार (doing gender) की धारणा को समझा जा सके। एक किन्नरलिंगी (transsexual) लड़के एग्नेस की केस स्टडी गारफिन्केल द्वारा की गई थी। यह स्टडी जेंडर निर्मिति को समझने का बढ़िया उदाहरण होगी। सत्रह साल की उम्र में एग्नेस ने एक स्त्री की पहचान ग्रहण की और इसके कुछ बरसों बाद जेंडर निर्मिति को समझने के लिए लिंग परिवर्तन हेतु सर्जरी करवायी। उसके पास पुरुष जननांग थे और वह अपने को औरत के रूप में प्रस्तुत करना चाहती थी। सामाजिक रूप से निर्मित स्थिति में वह स्त्रीवाचक अभिलक्षणों को सीखने और स्त्रीत्व की धारणा का विश्लेषण करने के लिए बाध्य (obliged) हुई। उसके पास ऐसे लिंग (सेक्स) की जैविक विशेषताएँ नहीं थीं, जिसे सामाजिक रूप से मान्य स्त्री लिंग की विशेषताएँ कहा जाता है। इस बहस का अधिक केन्द्रित बिन्दु केसलर और मैक्केन्ना की स्थिति है– वह यह कि जैविक मानदण्ड (लिंग) सार्वजनिक समझ से छिपा रहता है और व्यक्ति सामाजिक रूप से मान्य स्त्री या पुरुष मानदण्डों के अनुसार व्यवहार करना जारी रखता है। स्त्री या पुरुष जेंडर आरोपण प्रक्रिया का परिणाम है और जेंडर योग्यता/गतिविधि का महत्वपूर्ण भाग बनाता है। उदाहरण के लिए यदि एक बच्चा किसी व्यक्ति की सूट और टाई में तस्वीर देखता है, तो वह बच्चा तुरन्त

उस तस्वीर का तादात्म्य पुरुष की छवि से जोड़ लेता है। लिंग कोटि (sex category) सामाजिक रूप से स्थित होती है और व्यक्ति द्वारा दैनिक अन्तर्क्रियाओं के माध्यम से ग्रहण की जाती है। लोग किसी व्यक्ति की गतिविधियों का अनुभव करते हैं और उसी के अनुरूप लिंग की कोटि का निष्कर्ष निकाल लेते हैं। इस प्रसंग में, जेंडर को संस्कृति और समाज के उत्पाद के रूप में समझा जाता है (सन्दर्भ वेस्ट एण्ड जिम्मरमैन, 2002)।

ऊपर दिए गए उदाहरण दिखलाते हैं कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व की श्रेणियाँ किस प्रकार सामाजिक रूप से निर्मित की जाती हैं। और यह भी कि जेंडर पहचान तभी सुनिश्चित की जा सकती है, जब जैविक श्रेणीकरण के साथ इसकी पुष्टि कर ली जाए।

4.3.2 समाजीकरण

समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई शिशु (child) एक सामाजिक प्राणी के रूप में रूपान्तरित होता है। सामाजिक प्राणी का अर्थ है कि वह सामाजिक मूल्यों, मानकों और सामाजिक रूप से अपेक्षित व्यवहार का पालन करता है। वृहत्तर सन्दर्भ में लैंगिक भूमिका के हिसाब से किया जाने वाला समाजीकरण महिलाओं के शोषण का साधन है। स्टैनले और वाइज तर्क देते हैं कि लैंगिक भूमिका को प्रायः जेंडर भूमिका यानी स्त्रीत्व या पुरुषत्व के गुणधर्म की अभिव्यक्ति करने के तौर पर समझ लिया जाता है। विभिन्न संस्कृतियों में देखा गया है कि एक संस्था के रूप में परिवार जेंडर समाजीकरण और जेंडर भूमिकाओं को आत्मसात करने में सहायक बनता है। माँ या प्राथमिक देखभाल करने वाला व्यक्ति बच्चों के लिंग की श्रेणी के अनुसार उनसे अलग–अलग व्यवहार करता है। इस भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण में बच्चों को छूने, दुलार करने तथा लड़के के लिए स्वायत्तता का विचार और लड़कियों के लिए स्वायत्तता के अभाव जैसी बातें शामिल होती हैं। अधिकतर अभिभावक इस भेदभावपूर्ण व्यवहार का प्रदर्शन बच्चों के लिए विशिष्ट प्रकार के खिलौने, विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें देते समय भी करते हैं। इन पुस्तकों आदि के जरिये बच्चों में तस्वीरों के माध्यम से यह समझ बनती चली जाती है कि माँ रसोई में काम करती है। इसके अतिरिक्त जेंडर भूमिका और व्यवहार टेलीविजन में भी ऐसे दिखाए जाते हैं कि बच्चे दैनिक जीवन में रूढ़िवादी (स्टीरियोटाइप्ड) जेंडर भूमिकाओं की पहचान करते जाते हैं। परिवार और माता–पिता प्राथमिक माध्यम के तौर पर सामने आते हैं जिनके जरिये रूढ़िवादी (स्टीरियोटाइप्ड) जेंडर भूमिकाओं की पहचान बच्चों तक पहुँचती है (स्टैनले एण्ड स्यू वाइज, 2002)।

अपनी प्रगति को जाँचिए

1) जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) समाजीकरण को परिभाषित कीजए।

.....

.....

.....

.....

.....

आइए, अब हम एक बच्ची (छोटी लड़की) की सांस्कृतिक निर्मिति के बारे में पढ़ें।

4.3.3 एक छोटी बच्ची की सांस्कृतिक निर्मिति

एक छोटी लड़की की निर्मिति में हम भारत जैसे पितृसत्तात्मक और पुरुषप्रधान समाजों में एक बच्ची के समाजीकरण की प्रक्रिया की चर्चा करेंगे। इस अनुभाग में हम उन बाधाओं पर प्रकाश डालेंगे जिनका सामना एक छोटी बच्ची को एक महिला बनने के दौरान समाजीकरण की प्रक्रिया में करना पड़ता है। दूबे (2001) समाजीकरण की प्रक्रिया को सन्दर्भित करते हुए इसे जेंडर समाजीकरण का एक रूप कहते हैं जिसमें महिला और पुरुष को जेंडरीकृत प्राणी के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है। ये जेंडरीकृत प्राणी भाषा, प्रथाओं, समारोहों और व्यवहारों के द्वारा तैयार किए जाते हैं। भारतीय परिवारों में जेंडर के अन्तर की धारणा प्रजनन के समय से शुरू हो जाती है – जैसे सन्तानोत्पत्ति के सम्बन्ध में माता और पिता दोनों अलग–अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। सांस्कृतिक रूप से यह माना जाता है कि पिता बीज प्रदान करने वाला होता है और माता धरती का प्रतीक होती है, जो बीज को धारण करती हैं और उसका पोषण करती हैं। ये अलग–अलग भूमिकाएँ सांस्कृतिक रूप से कल्पित होती हैं और परिवार, विवाह और नातेदारी के द्वारा लगातार चलती रहती हैं। इसलिए परिवार और नातेदारी, जेंडर समाजीकरण को समझने में केन्द्रीय भूमिका निभाते हैं।

लड़की और मायका

स्त्रीत्व की निर्मिति एक जटिल और लगातार चलने वाली प्रक्रिया है जो भाषा, मुहावरों और प्रथाओं द्वारा व्यक्त होती है। समाजीकरण की प्रक्रिया में विवाहित और अविवाहित दोनों तरीके की महिलाओं के लिए मायके का सन्दर्भ मुहावरों के रूप में वृहद स्तर पर प्रयोग किया जाता है। रोजाना की बातचीत में भी 'भाषण' या 'कहावतों' के रूप में बेटे/लड़के की चाहत को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, ऐसे माता–पिता को, जिनकी केवल एक संतान पैदा होती है और वह भी बेटी पैदा होती है, प्रायः ऐसी स्थिति में माना जाता है 'जिनका भविष्य अन्धकारमय होता है क्योंकि बुढ़ापे में सहारे के लिए उनके पास कोई नहीं होता।' (दूबे, 2001)। इसी तरह मायका या माता–पिता का घर लड़कियों के लिए हमेशा अस्थायी घर माना जाता है। इसलिए लड़कियाँ इसी धारणा के साथ बड़ी होती हैं कि उनका अपना घर शादी के बाद भविष्य में बनेगा।

मुहावरे और प्रथाएँ इस अपरिहार्य तथ्य का अहसास कराती रहती हैं कि लड़कियों की सदस्यता उनके मायके से पति के घर अर्थात ससुराल में स्थानान्तरित हो जाएगी। दूबे ने भारत के कई भागों में बोली जाने वाली कहावतों का संग्रह किया है। उड़ीसा में एक कहावत है जिसके बोल हैं, ''घी के साथ बेटी''। इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि दोनों ही मूल्यवान हैं मगर यदि सही समय पर नहीं निबटाया गया तो दोनों बदबू फैलाती हैं। इसी प्रकार, दुर्गा पूजा और गौरी पूजा जैसे कुछ त्यौहार हैं जो देवियों के सन्दर्भ में 'घर वापसी'

जैसी धारणा को बल प्रदान करते हैं। ये त्यौहार तमाम अनुष्ठानों से युक्त होते हैं जो छोटी लड़कियों को यह संदेश देते हैं कि उन्हें अपनी माँ का घर छोड़ना है और उन्हें ऐसे ही त्यौहारों पर मायके में आमंत्रित किया जाएगा। एक छोटी लड़की की निर्मिति की शुरूआत उसी समय हो जाती है जब उसे यह अहसास होने लगता है कि मायके (पैतृक घर) की सदस्यता तो महज अस्थायी भर है। उसे इस अस्थायी सदस्यता के दौरान ही कुछ आदर्श स्त्रीवाचक व्यवहारों को सीखने की अनिवार्यता होती है।

लड़की के समाजीकरण की प्रक्रिया में स्त्रीत्व की सांस्कृतिक निर्मिति के दो चरण यौवन–पूर्व और यौवन–पश्चात शामिल होते हैं। लड़कियों में यौवन–पूर्व शुचिता के महत्व पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों जैसे महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक के साथ–साथ देश के अन्य भागों के रस्मों–रिवाजों में भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

बॉक्स सं. 4.2: केस विश्लेषण

नवरात्रि में कुँवारी कन्याओं की पूजा और उन्हें भोजन कराने की प्रथा पूरे भारत में व्यापक रूप से प्रचलित है। त्यौहार के आठवें दिन, किशोरावस्था से पूर्व की कन्याओं की जो दरअसल देवी माँ का प्रतिनिधित्व करती हैं, प्रथा के तौर पर पूजा की जाती है और उन्हें खाना खिलाने के साथ उपहार दिए जाते हैं। जेंडर विश्लेषण के लिए इससे निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं –

1) इस त्यौहार में लड़कियों को दिया गया रूप निश्चित रूप से स्त्रीवाचक प्रकृति का होता है।
2) स्त्रीत्व की चेतना का निर्माण उनके पहनावे की शैली से और उनको दिए गए उपहारों के माध्यम से किया जाता है, और
3) किशोरावस्था–पूर्व और किशोरावस्था–पश्चात के बीच बहुत स्पष्ट अन्तर रखा जाता है और परिणामस्वरूप स्त्रियों की पूर्व–किशोरावस्था के समय से शुचिता और पवित्रता का भाव जुड़ा होता है।

इन रस्मों–रिवाजों में स्त्रीत्व की निर्मिति को प्रतीक का रूप प्रदान किया जाता है और व्यवस्थित ढंग से उपयुक्त स्त्रीवाचक व्यवहार की रूपरेखा लड़कियों के दिमाग में बैठा दी जाती है।

किशोरावस्था का आरम्भ एक दौर होता है जो महिलाओं के जीवन में बदलाव और रूपान्तरण के लिए जाना जाता है। यह दौर तमाम कैशोर्य प्रथाओं, खाने के नियमन और कुछ दिनों के लिए घर के अन्य सदस्यों से लड़कियों के अलगाव से जुड़ा होता है। ये प्रथाएँ व्यापक रूप से भारत में अपनायी जाती हैं। ये कैशोर्य प्रथाएँ लड़कियों में विवाह और मातृत्व के सन्दर्भ में यौन शुचिता को बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करती हैं।

4.4 लैंगिक पृथक्करण का व्यवहार

लैंगिक पृथक्करण का अवलोकन एवं अध्ययन अधिकांशतः पेशेवर और आर्थिक संरचनाओं में किया जाता है, जो दिखलाता है कि किसी आर्थिक सुधार के दौर में महिलाएँ किन्हीं विशिष्ट प्रकार के पेशों को अधिक अपनाती हैं। पर्दा प्रथा या महिलाओं को अलग रखने की प्रथा का पालन विभिन्न देशों और समुदायों के बीच व्यापक तौर पर किया जाता है और इसमें कार्यों और गतिविधियों में स्पष्ट तौर पर लैंगिक पृथक्करण निर्धारित होता है।

बांग्लादेश में, महिलाओं के अलगाव का व्यवहार अन्दर/बाहर के विभाजन के आधार पर किया जाता है। लेखक कहता है कि बांग्लादेश की गरीब महिलाएँ दोहरे तौर पर एक खाँचेबद्ध (stereotyped) अवस्था में रखी जाती हैं। गरीब महिलाओं को निष्क्रिय और कमजोर बनाए रखा जाता है, फिर भी उन्हें विकास के लिए सम्भावनाशील लक्षित समूह माना जाता है। महिलाओं की इस तस्वीर को तमाम सांस्कृतिक निर्मितियों के माध्यम से मजबूत किया जाता है जैसे कि, "महिलाओं को जीवित रहने के लिए हमेशा पुरुषों के संरक्षण की जरूरत होती है।" उदाहरण के लिए, अन्दर/बाहर के विभाजन ने घरों की चारदीवारी से बाहर निकलने में महिलाओं की स्वतन्त्रता को कम किया है। इसलिए वे पारिवारिक जीवन के क्षेत्र के अन्दर ही गतिविधियाँ निष्पादित करती हैं (कबीर, 1990)।

श्रम बाजार में भेदभावपूर्ण मजदूरी, कार्य की प्रकृति और कार्य की मात्रा के सम्बन्ध में महिला और पुरुष के बीच गहरी खाई है। परम्परागत तौर पर माना जाता है कि महिलाओं को पुरुषों पर निर्भर होना चाहिए। उदाहरण के लिए, परिवार के अन्दर महिलाओं की संसाधनों तक पहुँच अपने पुरुष सहभागी के द्वारा होती है। इसी तरह श्रम बाजार में महिलाएँ मजदूरी पाने और अन्य कार्य अवसरों की खोज में दूसरे पुरुषों के माध्यम का प्रयोग करती हैं। महिलाओं की बहुमत संख्या असंगठित क्षेत्र में रोजगार करती है (महिला कार्यबल का 95.79 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में है जबकि पुरुष कार्यबल का 89.77 प्रतिशत)। श्रम बाजार में जेंडर के आधार पर भेदभाव किया जाता है और यह भेदभाव असंगठित और निजी क्षेत्रों में काम कर रही महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक असुरक्षा का कारण बनता है (सेठ 2001)। इसी प्रकार राजनीतिक और तकनीकी रोजगार में भी महिलाओं की सहभागिता बहुत कम है। कृषि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान बहुत अधिक है हालाँकि, अधिकांश महिलाएँ सीमान्त कर्मकारों की तरह हैं। कृषि में महिलाओं और पुरुषों के बीच विभाजित काम की प्रकृति में भी भेदभाव किए जाते हैं। भारत के अधिकांश राज्यों में पुरुष जुताई और सिंचाई से सम्बन्धित कार्यों में लगे हैं और महिलाएँ अधिकांशतः बुआई, पौधों की देखभाल और कटाई जैसे कार्यों में लगी हैं। यह भी देखा गया है कि पुरुष खेतिहर उत्पादों के विपणन कार्यों में लगे हैं। संसाधनों के नियन्त्रण और आधिक्य से सम्बन्धित विषय को भी पुरुषों का कार्यक्षेत्र माना गया है। इतना ही नहीं, प्राथमिक देखभाल करने वाले की भूमिका में महिलाओं की स्थिति ऐसी हो जाती है कि वे लचीला और अस्थायी काम स्वीकार करने के लिए तैयार रहती हैं। यह भी सही निष्कर्ष निकाला गया है कि महिलाओं को खेती में 'आरक्षित सेना' की तरह माना जाता है जिन्हें श्रम बाजार से इसलिए बाहर रखा जा सकता है कि श्रम संकट की स्थिति में उनका प्रयोग किया जा सके। महिलाएँ एक कर्मचारी की तरह किसी संविदा में नहीं बँधतीं और उन्हें खराब सुरक्षा स्थितियों और अन्य संवेदनशील स्थानों में लगाए रखा जाता है। वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए स्त्रियाँ कार्यबल के रूप में प्राथमिक महत्व की हैं लेकिन साथ ही स्वास्थ्य और श्रम सुरक्षा मानकों से वंचित भी हैं।

अपनी प्रगति को जाँचिए

1) लैंगिक पृथक्करण जेंडर निर्मिति को समझने में कैसे सहायता करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) एक छोटी लड़की की सांस्कृतिक निर्मिति का क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

.....

अब हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि श्रम विभाजन और कार्यक्षेत्र का क्या अभिप्राय है।

4.5 श्रम विभाजन और कार्यक्षेत्र

जेंडर सम्बन्ध, श्रम के लैंगिक (सेक्सुअल) विभाजन के अन्दर समाहित होते हैं और प्रायः जेंडर संघर्ष उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए, अफ्रीका में कृषि को प्रायः खेती की स्त्रैण प्रणाली समझा जाता है। कृषि में कार्यक्षेत्र का विभाजन जेंडर के अनुरूप किया जाता है। अफ्रीका में महिलाओं और पुरुषों के बीच कार्यक्षेत्र का अलगाव ही महिलाओं और पुरुषों के बीच श्रम के सामाजिक विनिमय का संकेत करता है। हालाँकि, महिलाओं का कार्यक्षेत्र दावों और बाध्यताओं के जटिल समुच्चय से घिरा होता है। जैसा व्हाइटहेड तर्क देते हैं कि अफ्रीका में दो भिन्न प्रकार के सामाजिक वातावरण महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को निर्धारित करते हैं। महिलाओं के कार्यक्षेत्र में संसाधनों जैसे भूमि और उत्पादों तक उनकी पहुँच में उनके बच्चे, पति और परिवार के अन्य सदस्य भागीदार होते हैं। महिलाओं का दायित्व होता है कि वे अपने पति और परिवार के अन्य सदस्यों के लिए कार्य करें लेकिन इन श्रमयुक्त कार्यों के बदले या उसके लाभ में महिलाओं को कुछ भी नहीं मिलता। दरअसल महिलाओं का श्रम अधिकारों और दायित्वों के सामाजिक वातावरण में गठित होता है। पति के खेत में महिलाओं के कार्य को उसके सामान्य अधिकारों और कल्याण तथा परिवार के एक सदस्य के रूप में सहारे की तरह समझ लिया जाता है।

स्त्रियों के कार्य के क्षेत्र में बोसरुप की पुस्तक 'वीमेन्स रोल इन इकोनॉमिक डेवलपमेंट' को व्यापक रूप से मान्यता मिली हुई है।

बॉक्स संख्या 4.3

बोसरुप ने खेती की दो प्रणालियों की चर्चा की है – अफ्रीका में प्रचलित "स्त्रैण प्रणाली" बनाम एशियाई देशों में प्रचलित "पुरुष प्रणाली"। अफ्रीकी खेती स्त्रैण प्रणाली की ओर झुकाव रखती है जिसकी विशिष्टता होती है पारिवारिक श्रम का इस्तेमाल जिसमें स्त्री श्रमबल की भागीदारी की प्रतिशतता अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता और गतिशीलता तक महिलाओं की अधिक पहुँच, दुल्हनों की ऊँची कीमत और लड़कों को कम तरजीह देने जैसी बातें सामने आती हैं।

जबकि एशियाई देशों की पुरुष प्रणाली की विशिष्टताओं में पुरुष के मजदूरीयुक्त श्रम की अधिक भागीदारी होती है जो खेती से महिलाओं को बाहर करने का संकेत करता है। खेती से महिलाओं के अलगाव की यह परम्परा कुछ सामाजिक मानकों; जैसे – महिलाओं के विरासत अधिकारों में कमी, दहेज, पुत्रों को अधिक तरजीह देना और बढ़ती महिला मृत्यु दर के फलस्वरूप असन्तुलित होते लिंगानुपात के रूप में व्यक्त होती है।

बॉक्स संख्या 4.3 में वर्णित किए गए खेतिहर मॉडल में कृषि के सन्दर्भ में श्रम विभाजन की अवधारणा की स्पष्ट रूप से चर्चा की गई है। आरम्भ करते हुए लेखक ने अफ्रीकी खेती की प्रणाली को 'खेती की स्त्रैण प्रणाली' कहा है जिसमें आधुनिकता और आर्थिक विकास के दौर में महिलाएँ हाशिए पर निर्वासित कर दी गईं। व्हाइटहेड तर्क देते हैं कि कैसे कृषि भी अपनी प्रकृति में जेंडर से युक्त है – नकदी फसल वाले क्षेत्रों का प्रबन्ध पुरुष और उनके पुरुष साथियों द्वारा किया जाता है जबकि खाद्य फसल क्षेत्रों की व्यवस्था महिला श्रम द्वारा की जाती है। अफ्रीका के सन्दर्भ में यह मॉडल निर्वाह कृषि की स्त्रैण प्रकृति और आधुनिक कृषि क्षेत्रों में भागीदारी में महिलाओं की अयोग्यता पर जोर देती है। हालांकि, इस ढाँचे की आलोचना इस आधार पर की गई है कि इसमें आधुनिक खाद्य उत्पादन में महिलाओं के योगदान को बिल्कुल उपेक्षित कर दिया है। अफ्रीकी घरों की नकदी की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए स्त्रियों ने नकदी फसलों या बढ़े हुए व्यापार हेतु पारिवारिक श्रम में महत्वपूर्ण भागीदारी की है।

कार्य को प्रायः शारीरिक और मानसिक श्रम समझा जाता है। होश्चाइल्ड (रेडफर्न एण्ड ऑने, 2010 द्वारा उल्लिखित) ने एक नई शब्दावली 'भावुक श्रम' का प्रयोग किया जो एक विशिष्ट प्रकार के कार्य की ओर इशारा करती है। यह कार्य देखभाल और पोषण से सम्बन्धित होता है। भावुक श्रम स्त्रैण पेशे से जुड़ा होता है चाहे वह परिवार हो या फिर कार्यक्षेत्र। चूँकि इस श्रम की अच्छी खासी जरूरत है, इसलिए इस विशिष्ट प्रकार के कौशल के लिए भी भविष्य में भुगतान किया जाना चाहिए। परिवार में स्त्रियों के गैर–भुगतान वाले कार्यों को 'प्यार का श्रम' कहा गया है जो राष्ट्रीय लेखांकन प्रणाली में अलाभकर बना रह जाता है।

बाक्स संख्या 4.4

प्यार का श्रम

क्या आपके कई बच्चे हैं? डॉक्टर ने पूछा।

ईश्वर ने मुझसे मुँह मोड़ रखा है। जन्म ले चुके पन्द्रह बच्चों में से केवल नौ जीवित हैं।

क्या आपकी पत्नी कार्य करती हैं?

नहीं, वह घर पर रहती हैं।

ओह, वह अपना दिन कैसे बिताती हैं? डॉक्टर ने पूछा।

वह सुबह चार बजे जग जाती हैं, पानी भरती हैं, लकड़ी काटती हैं, आग जलाकर नाश्ता तैयार करती हैं। फिर वह कपड़े धोने के लिए नदी जाती हैं। उसके बाद वह अनाज पिसवाने कस्बे जाती हैं और जिस चीज की जरूरत होती है, उसे बाजार से खरीदकर लाती हैं। फिर वह दोपहर का भोजन पकाती हैं।

क्या आप दोपहर में घर आते हैं?

नहीं, नहीं, वही खेतों में मेरे लिए खाना ले आती हैं – घर से तीन किलोमीटर दूर है बस।

फिर उसके बाद?

हूँ, वह मुर्गियों और सुअरों का ध्यान रखती हैं और वास्तव में वह दिनभर बच्चों की भी देखभाल करती हैं....फिर वह रात का भोजन पकाती हैं और जब मैं घर लौटता हूँ, तो भोजन तैयार रहता है।

क्या रात का भोजन पकाने के बाद सोने चली जाती हैं?

नहीं, मैं खाकर सोने चला जाता हूँ। उसके पास घर के और भी कुछ काम होते हैं और रात के नौ बजे तक वह खाली हो पाती हैं।

फिर भी आप कहते हैं कि पत्नी कुछ काम नहीं करतीं?

हाँ, डॉक्टर सचमुच वह कुछ नहीं करती। मैंने बताया तो आपको, कि वह घर पर रहती हैं।

(स्रोतः आईएलओ 1977, मिट्टर 2002 द्वारा उद्धृत)

यह उपरोक्त उद्धरण बताता है कि महिलाएँ कितनी तरह के कामों में लगी रहती हैं, जिन्हें न केवल स्त्रीवाचक काम ही माना जाता है, बल्कि वह काम अदृश्य और बिना किसी भुगतान के रह जाता है।

4.6 सारांश

जैविक लिंग (सेक्स) और सामाजिक जेंडर के बीच अन्तर दिखलाते हुए इस इकाई में जेंडर की संकल्पना की चर्चा की गई। जेंडर को एक सामाजिक निर्मिति के साथ–साथ सांस्कृतिक निर्मिति के रूप में समझने में इकाई ने सहायता की। हमने यह भी देखा कि सामाजिक विभाजन के रूप में जेंडर ने समाजीकरण, कार्य, लैंगिक पृथक्करण और श्रम विभाजन के सन्दर्भ में महिलाओं और पुरुषों को भेदभावपूर्ण ढंग से प्रभावित किया है।

4.7 शब्दावली

सगोत्रता : सगोत्रता ऐसे व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध है, जो जैविक, सांस्कृतिक या ऐतिहासिक वंशानुक्रम से एक ही वंश के होते हैं।

ऑनर किलिंग : ऑनर किलिंग, परिवार या सामाजिक समूह के किसी सदस्य की अन्य सदस्यों द्वारा की गई हत्या है। यह हत्या अपराधी (अधिकतर यह बड़ा समुदाय होता है) के इस विश्वास पर की जाती है कि पीड़ित ने परिवार या समुदाय की बदनामी करवाई है। ऑनर किलिंग के ज्यादातर मामले महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ होते हैं।

4.8 सन्दर्भ

स्टैनले, एल. एण्ड वाइज, एस. (2002) 'व्हाट्स रांग विद सोशलाइजेशन', इन जैक्सन, एस. एण्ड स्कॉट, एस. (संपा.) जेंडर : ए सोशियोलॉजिकल रीडर, लन्दन : रूटलेज।

जैक्सन, एस. एण्ड स्कॉट, एस. (2002) इन्ट्रोडक्शन : द जेंडरिंग ऑफ सोशियोलॉजी, इन जैक्सन, एस. एण्ड स्कॉट, एस. (संपा) जेंडर : ए सोशियोलॉजिकल रीडर, लन्दन : रूटलेज।

दूबे, एल. (2001) एन्थ्रोपोलॉजिकल एक्सप्लोरेशन्स इन जेंडर : इण्टरसेक्टिंग फील्ड्स। इण्डिया : सेज पब्लिकेशन प्रा. लि.।

कबीर, एन (1990) 'पॉवर्टी, पर्दा एण्ड विमेन्स सरवाइवल स्ट्रेटजीज इन रुरल बंग्लादेश, इन बर्न्सटाइन, एच, क्रो, बी, मैकिण्टोश, एम, एण्ड मार्टिन, सी (संपा.) द फूड क्वेश्चन : प्रोफाइल वर्सेज पीपल?, लन्दन : अर्थस्कैन पब्लिकेशंस लि.।

कबीर, एन. (2010) जेंडर एण्ड सोशल प्रोटेक्शन स्ट्रेटजीज इन द इनफॉर्मल इकोनॉमी, लन्दन : रूटलेज।

सेठ, एम. (2001) विमेन एण्ड डेवलपमेण : द इंडियन एक्सपीरिएंस। नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशंस।

व्हाइटहेड, ए. (1990) 'फूड क्राइसिस एण्ड जेंडर कॉन्फ्लिक्ट इन द अफ्रीकन कन्ट्रीसाइड', इन बर्न्सटाइन, एच, क्रो, बी, मैकिण्टोश, एम, एण्ड मार्टिन, सी (संपा.) द फूड क्वेश्चन : प्रोफाइल वर्सेज पीपल?, लन्दन : अर्थस्कैन पब्लिकेशंस लि.।

रेडफर्न, सी एण्ड क्रिस्टिन ऑने (2010)। रीक्लेमिंग द एफ वर्डः द न्यू फेमिनिस्ट मूवमेण्ट। बंगलोर : बुक्स फॉर चेंज।

वेस्ट, सी. एण्ड जिम्मरमैन, डी.एच. (2002), 'डूइंग जेंडर', इन जैक्सन, एस. एण्ड स्कॉट, एस. (संपा.) जेंडर : ए सोशियोलॉजिकल रीडर, लन्दन : रूटलेज, पृष्ठ 31–42।

मिट्टर, एस. (2002) 'विमेन वर्किंग वर्ल्ड वाइड', इन जैक्सन, एस. एण्ड स्कॉट, एस. (संपा) जेंडर : ए सोशियोलॉजिकल रीडर, लन्दन : रूटलेज, पृष्ठ 112–116।

पटेल, आर. (2010) वर्किंग द नाइट शिफ्ट : विमेन इन इण्डियाज कॉल सेंटर इण्डस्ट्री, नई दिल्ली : ओरिएण्ट ब्लैक स्वान।

कबीर, एन. (2000) द पॉवर टू चूज, लन्दन : वर्सो।

4.9 इकाई के समापन पर प्रश्न

1) क्या जेंडर की निर्मिति सामाजिक तौर पर होती है? अपने तर्कों को उपयुक्त उदाहरणों से पुष्ट करें।
2) समाज और संस्कृति के एक उत्पाद के रूप में जेंडर की व्याख्या करें।
3) श्रम विभाजन और लैंगिक पृथक्करण जैसे पहलू स्त्रीत्व और पुरुषत्व की धारणा की व्याख्या किस प्रकार करते हैं?